मटर का पर्ण सुरंगक कीट

- ✓ प्रौढ़ मक्खी छोटी काले रंग की होती है और इसका सिर पीला होता है।
- ✓ ये कीट पत्ती के पैरेनकाइमा ऊतकों को खाकर टेढ़ी–मेढ़ी सुरंग बनाते हैं।
- ✓ अत्यधिक ग्रसित पत्तियां पीली होकर गिर जाती है।

समन्वित कीट प्रबंधन

- ✓ ग्रसित पत्तियों को तोड़कर जमीन में दबा देना चाहिए, ताकि पत्तियों में छिपे कीट व कृमिकोष नष्ट हो जाएं।
- ✓ ऑक्सी–डेमेटोन मिथाइल 25 पायस सांद्रण या डाइमिथोएट 30 पायस सांद्रण की एक लीटर मात्रा को 600–800 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टेयर की दर से छिडकाव करें अथवा इमिडाक्लोप्रिड 1708 एस.एल. को 5 मि.ली./15 लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव करें।

गोभी की तितली : सरसों

- ✓ इस कीट की लार्वी ही पौधों को क्षति पहुंचाती है । प्रारंभिक अवस्था में वे पास–पास रहकर खाती है, परन्तु बाद में इधर–उधर फैल जाती है और एक पौधे पर आने के बाद दूसरे पौधे पर चली जाती है। अधिक प्रकोप होने पर पौधे पूर्णतया नष्ट हो जाते हैं।
- ✓ ये बड़े पौधों के शीर्ष के आस–पास वाले पत्तों की शिराओं को छोड़कर सभी भागों को खा जाती हैं।

समन्वित कीट प्रबंधन

- ✓ प्रारम्भिक अवस्था में लार्वा एक–साथ में रहकर खाते है अतः उनको हाथ से पकड़कर नष्ट करने से इस कीट का नियंत्रण किया जा सकता है ।
- ✓ एंटिफीडेंट के रूप में 5 प्रतिशत नीम सीड कर्नल एक्सट्रेक्ट का छिड़काव करें।

प्रशासनिक भवन

शैक्षणिक भवन

विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें:
डॉ. एस.एस. सिंह
निदेशक प्रसार शिक्षा
प्रसार शिक्षा निदेशालय
दूरभाष : +91–789746699
ई–मेल : directorextension.rlbcau@gmail.com

प्रकाशित:
कुलपति
रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
झाँसी 284003, उत्तर प्रदेश (भारत)

मुद्रक : क्लासिक इण्टरप्राइजेज, झाँसी. 7007122381

प्र.शि.नि./त.प्र.सा.-फोल्डर/2023/74

सरसों के प्रमुख कीट एवं उनका नियंत्रण

ऊषा, विजय कुमार मिश्रा, माईमोम सोनिया देवी,
हरीचन्द, एस.के. चतुर्वेदी एवं एस.एस. सिंह

कीट विज्ञान विभाग

प्रसार शिक्षा निदेशालय
रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
झाँसी 284003, उत्तर प्रदेश (भारत)
वेबसाईट : www.rlbcau.ac.in

सरसों के प्रमुख कीट एवं उनका नियंत्रण

प्रस्तावना

सरसों की उपज को बढ़ाने तथा उसे टिकाऊपन बनाने के मार्ग में नाशक जीवों का प्रकोप एक प्रमुख समस्या है। इस फसल को कीटों से काफी नुकसान पहुंचता है जिससे इसकी उपज में काफी कमी हो जाती है। यदि समय रहते इन कीटों का नियंत्रण कर लिया जाये तो सरसों के उत्पादन में बढ़ोत्तरी की जा सकती है। चेंपा या माहू, आरामक्खी, चितकबरा कीट, लीफ माइनर, बिहार हेयरी केटरपिलर आदि सरसों के मुख्य नाशी कीट हैं।

माहूं (चौपा/मोयला/एफिड)

प्रौढ़ माहूं दो अवस्थाओं में पाया जाता है। पहला पंखरहित और दूसरा पंखसहितद्य पंखरहित प्रौढ़ 2 मि. मी. लंबे, गोलाकार व हरे रंग के या हल्के हरे पीले रंग के होते है। इनके शिशु तथा प्रौढ़ दोनों ही अवस्थाएँ पौधों की पत्ती, तना, पुष्पक्रम, टहनी और फलियों से रस चूसकर नुकसान पहुंचाते हैं।

नियंत्रण

- ✓ खाली टिन के 10 डब्बों को पीला रंग से पोत कर उनके ऊपर एक परत पारदर्शी ग्रीस लगाये और लम्बे लकड़ी के डंडे पर लगाकर 25 मीटर की दूरीपर इन सभी डब्बों को उचित दूरी एक हेक्टेयर क्षेत्र में लगा दें। या 10–12 येलो स्टिकी ट्रैप/प्रति हेक्टेयर की दर से 25–30 मीटर की दूरी पर लगायें।
- ✓ एसिटामिप्रिड 20 एस.पी. की 50 ग्राम 600 लीटर पानी में मिलाकर या इमिडाक्लोपिड 17.8 एस. एल. 0.3 मिली. प्रति लीटर पानी के साथ मिलाकर या थाइमेथोक्सम 25 डब्लू जी./ 0.006% प्रति हे. की दर से छिड़काव करें।
- ✓ मित्र कीटों का संरक्षण करें।

आरा मक्खी

- ✓ इस कीट की प्रौढ़ मक्खी 8–11 मि.मी. लंबी, पीले–नारंगी रंग की ततैया की तरह होती है।
- ✓ इसकी सुंडी गहरे हरे रंग की होती है, जिसकी पीठ पर पांच लंबवत धारियां होती है।
- ✓ सूंडी, पत्तियों को काटकर उनमें अनियमित आकार के छेद कर देती हैं।
- ✓ यह कीट मुख्य रूप से फसल की पौधावस्था (अक्टूबर–नवंबर) में ही नुकसान पहुंचाता है।

नियंत्रण

- ✓ बुवाई के तीन से चार हफ्ते के बाद पहली सिंचाई करें। जिससे अधिकांश लार्वा डूबने से मर जाते हैं।
- ✓ एंटिफीडेंट के रूप में 5 प्रतिशत नीम सीड कर्नल एक्सट्रेक्ट का छिड़काव करें।
- ✓ इंडोक्साकारब 14.5 एस.सी. की 200 मिली दवा अथवा इमामोक्टिन बेंजोऐट 5 एस.जी. की 10 ग्राम दवा अथवा क्लोरेनट्रेनिप्रोल 18.5 एस.सी. की 150 मिली दवा की मात्रा को 600 से 700 लीटर पानी में मिलाकर प्रति हे. की दर से छिड़काव करें।

चितकबरा कीट : सरसों

- ✓ प्रौढ़ कीट के शरीर के ऊपर काले व चमकीले नारंगी रंग के धब्बे होते हैं।
- ✓ शिशु एवं प्रौढ़ दोनों ही पौधे की पत्तियों एवं प्ररोह से रस चूसकर हानि पहुंचाते हैं।
- ✓ फसल की दो पत्ती अवस्था में नुक्सान होने पर ग्रसित उपरी भाग मुरझाकर सूख जाता है।

नियंत्रण

- ✓ बुआई के 3–4 सप्ताह बाद यदि संभव हो, तो पहली सिंचाई कर देनी चाहिए।
- ✓ एसिटामिप्रिड 20 एस.पी. की 50 ग्राम 600 लीटर पानी में मिलाकर या इमिडाक्लोपिड 17.8 एस.एल. 0.2 मिली. प्रति लीटर पानी के साथ मिलाकर या थाइमेथोक्सम 25 डब्लू. जी./ 0.006% प्रति हे. की दर से छिड़काव करें। यदि दोबारा से कीट का प्रकोप हो तब 15 दिनों के अन्तराल से पुनः छिड़काव करें।